एक था बुधिया...
कहानी एक खुशहाल गाँव की...
भाग - १

ये कहानी है भारत के एक छोटे से गाँव जगदीश पुर की, जहाँ काफी समय से अज्ञानता और अंधविश्वास के कारण गाँव में पिछले कई सालों से कोई तरक्की नहीं हुई... लेकिन एक दिन ऐसा आया जब उसी गाँव के एक नौजवान लड़के ने वर्षों पुरानी परम्परा को तोड़ते हुये गाँव वालों की आँखे खोल दी... उसने न केवल लोगों के मन में कई वर्षों से चली आ रही अज्ञानता और रूढ़िवादिता को समाप्त किया बल्कि गाँव के लोगों को विकास की ऐसी राह दिखायी जिससे कुछ ही वर्षों में वो गाँव सबसे खुशहाल और समृद्ध गाँव बन गया और दूसरे कई गाँव के लिये एक आदर्श गाँव बन गया... जानना चाहेंगे, आखिर ये हुआ कैसे?

आईये देखें कैसे गाँव की तकदीर बदली।

(चौपाल लगा है... गाँव का मुखिया बैठा है और कुछ अन्य लोग भी बैठे हुये हैं...)
(तभी अचानक कुछ लोग एक साथ मुखिया की तरफ आते हुये... पुरूष एवं महिलायें...)
सब लोग: राम, राम! मुखियाजी...
मुखिया: राम राम! राम राम!
मुखिया: अरे बुधिया तुम... पार्वती... नन्हें... मिसरी... तुम सब के सब, आओ आओ बैठो बैठो और बताओ, आज अचानक तुम सबका कैसे आना हुआ।
बुधिया: वो क्या है ना मुखियाजी, सुना है गाँव में परमाणु बिजलीघर आने वाला है! क्या ये सच है?

मुखिया: हाँ भाईयों सुना तो मैंने भी है। लेकिन तुम सब इतना परेशान क्यों हो? ये तो हमारे गाँव के लिये बहुत अच्छी बात है।
पार्वती: ये क्या कह रहे हैं मुखियाजी... हमने तो सुना है कि उससे बहुत सारा विकिरण निकलता है, जिससे कि हम सब की मौत हो जायेगी। यहाँ तक कि हमारे बच्चे और जानवर भी विकलांग पैदा हो सकते हैं।
मुखिया: (हंसते हुये) ये क्या कह रही हो पार्वती... अगर ऐसा होता तो वहाँ पर काम करने वाले भी सभी लोग मर जाते ऐसा बिल्कुल भी नहीं होता है।
हमें उससे डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है।
(सब लोग एक दूसरे का मुहँ देखते हुये...)
मुखिया: क्या आपको पता है कि हम सब जिस भगवान सूर्य की उपासना करते हैं उनसे भी विकिरण निकलता है ? तुम जिन मकानों में रहते हो उससे भी विकिरण निकलता है। यहाँ तक कि तुम जो खाते हो, पीते हो, टीवी देखते हो, रेडियो सुनते हो या फिर अपने मोबाइल से बात करते हो, सभी चीजों से विकिरण निकलता है। (सब लोग चुपचाप सुनते हुये...)

मुखिया: इसे देख रही हो... ये कौन है? (मुखिया इशारा करता है...) ये मेरा पोता समीर है। आज ही शहर से आया है... आगे की बातें तुमको समीर बतायेगा।
(सभी गाँव वाले समीर की ओर देखते हुये...)
समीर: सभी लोगों को मेरा सादर प्रणाम !
समीर: क्यों पार्वती काकी पहचाना मुझे ...?
(पार्वती देख के मुस्कराती है ...) पार्वती: अरे हाँ समीर... इतना बड़ा हो गया है।
समीर: दादाजी बिल्कुल ही ठीक कह रहे हैं। दरसल विकिरण एक प्रकार की ऊर्जा होती है, जो संसार की प्रत्येक वस्तु में विद्यमान होती है... और हाँ, जहाँ तक परमाणु बिजलीघर से निकलने वाली विकिरण की बात है तो वो तो बिल्कुल ही नगण्य है, यानी ना के बराबर। समझे ...?

समीर: अच्छा मुझे बताइये आप में से कितने लोगों ने अपना-अपना एक्स-रे निकलवाया है?
(तीन-चार लोग हाथ खड़ा करते हैं...)
समीर: क्या आपको पता है कि एक बार एक्स-रे कराने पर जितना विकिरण आपके शरीर को लगता है, वो लगभग २० साल तक परमाणु बिजलीघर में काम करने या उसके आस-पास रहने के बराबर होता है।
सभी: अच्छा! (सब के सब एक दूसरे की तरफ देखते हुए...)
मिसरी: लेकिन हमने तो ये भी सुना है कि परमाणु बिजली घरों में काम करने वाले और इसके आस-पास में रहने वाले लोगों को सभी प्रकार के कैंसर का खतरा होता है।
समीर: मिसरी काकी आपने बिल्कुल ही गलत सुना है। केवल परमाणु बिजलीघर में काम करने या फिर इसके आस-पास रहने से कोई कैंसर नहीं होता है...मिसरी काकी अगर ऐसा होता तो वहाँ कोई भी काम ही नहीं करता।

समीर: और हाँ, पिछले साल आप ही के गाँव के ४ लोगों की मौत तंबाकू खाने से मुँह के कैंसर के कारण हुई थी।
जब कि परमाणु बिजलीघरों में सुरक्षित उपकरणों और वस्त्रों के उपयोग से वर्षों तक कार्य करने के बाद भी लोगों को कुछ नहीं होता है।
समीर:
इसके विपरीत विकिरण का प्रयोग सीटी-स्कैन और एम.आर.आई. के जरिये कैंसर के रोगों का पता लगाने और उसके उपचार में भी किया जाता है। समझे...?
पार्वती : लेकिन बेटे... कल सविता बता रही थी कि परमाणु बिजली घर के आस-पास रहने वाली महिलायें विकिरण के कारण कभी माँ नहीं बन पाती हैं। उन्हें बच्चा नहीं पैदा होता है। क्या ये सही है?
समीर : हंसते हुये... पार्वती काकी, सविता काकी बिल्कुल ही गलत बात कह रही थीं.... ये सब अफवाह है... बल्कि विकिरण के उपयोग से सोनोग्राफी मशीन द्वारा आपके बच्चे के विकास का सही-सही पता चलता है। इसलिये विकिरण आपका दोस्त है... शत्रु नहीं... समझीं काकी? और बुधिया काका आपको याद है कि पिछले साल संक्रमित सुई के कारण गाँव में रहने वाले रामनरेश के पुत्र सरयु की मौत हो गयी थी।

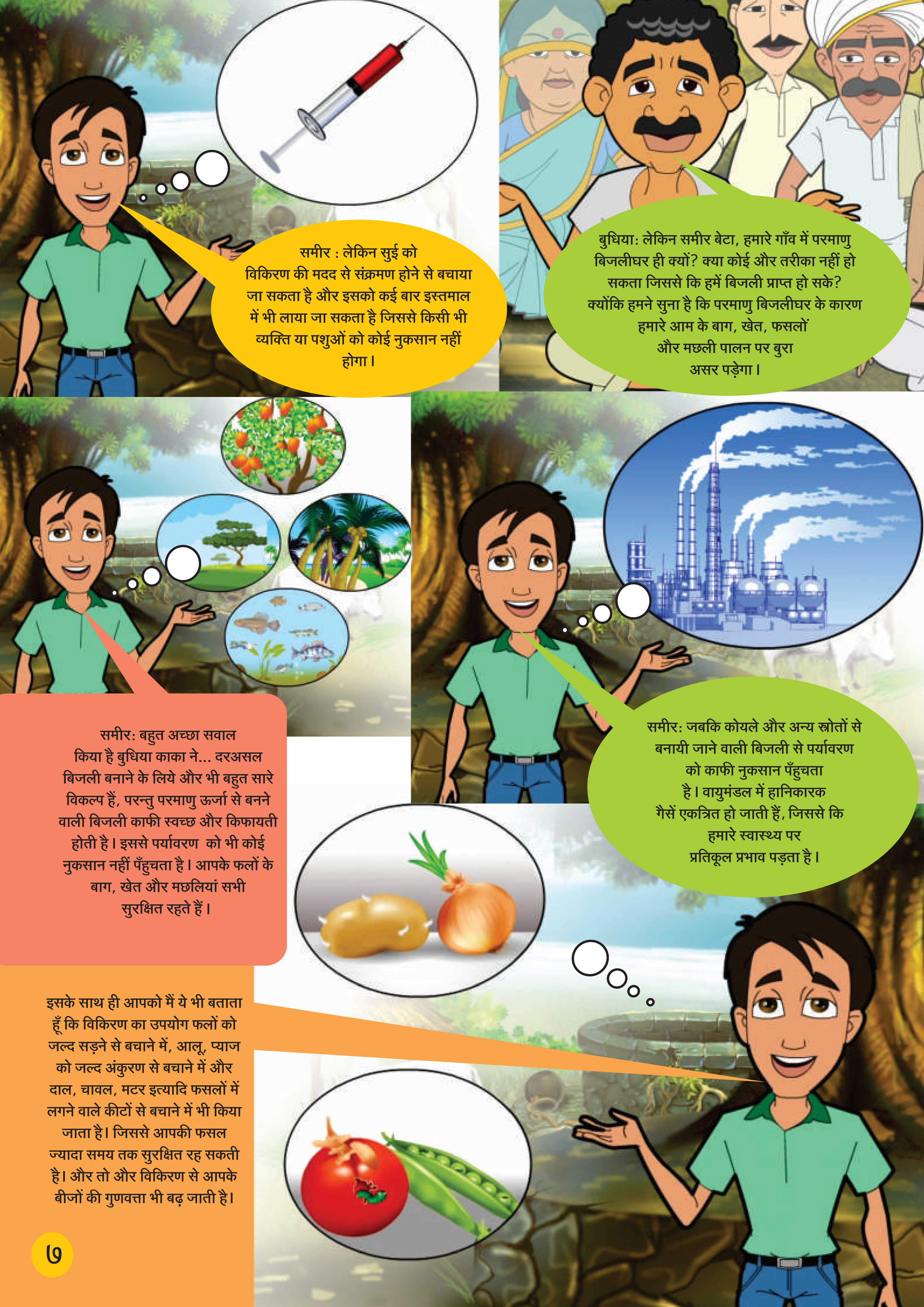
समीर : लेकिन सुई को विकिरण की मदद से संक्रमण होने से बचाया जा सकता है और इसको कई बार इस्तमाल में भी लाया जा सकता है जिससे किसी भी व्यक्ति या पशुओं को कोई नुकसान नहीं होगा।
बुधिया: लेकिन समीर बेटा, हमारे गाँव में परमाणु बिजलीघर ही क्यों? क्या कोई और तरीका नहीं हो सकता जिससे कि हमें बिजली प्राप्त हो सके? क्योंकि हमने सुना है कि परमाणु बिजलीघर के कारण हमारे आम के बाग, खेत, फसलों और मछली पालन पर बुरा असर पड़ेगा।
समीर: बहुत अच्छा सवाल किया है बुधिया काका ने... दरअसल बिजली बनाने के लिये और भी बहुत सारे विकल्प हैं, परन्तु परमाणु ऊर्जा से बनने वाली बिजली काफी स्वच्छ और किफायती होती है। इससे पर्यावरण को भी कोई नुकसान नहीं पँहुचता है। आपके फलों के बाग, खेत और मछलियां सभी सुरक्षित रहते हैं।
समीर: जबकि कोयले और अन्य स्त्रोतों से बनायी जाने वाली बिजली से पर्यावरण को काफी नुकसान पँहुचता है। वायुमंडल में हानिकारक गैसें एकत्रित हो जाती हैं, जिससे कि हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
इसके साथ ही आपको मैं ये भी बताता हूँ कि विकिरण का उपयोग फलों को जल्द सड़ने से बचाने में, आलू, प्याज को जल्द अंकुरण से बचाने में और दाल, चावल, मटर इत्यादि फसलों में लगने वाले कीटों से बचाने में भी किया जाता है। जिससे आपकी फसल ज्यादा समय तक सुरक्षित रह सकती है। और तो और विकिरण से आपके बीजों की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है।

समीर: और एक बात... बाकी स्त्रोतों से बिजली बनाने के संसाधन सीमित हैं, जब कि प्रचुर मात्रा में संसाधन होने के कारण परमाणु ऊर्जा से हम कई वर्षों तक बिजली का निर्माण कर सकते हैं।
नन्हें : लेकिन बेटा एक बात बताओ कि हमने सुना है कि सौर ऊर्जा और पवन चक्की से भी बिजली पैदा की जा सकती है... ऐसे में हमें परमाणु ऊर्जा से ही बिजली क्यों चाहिये ?
समीर : नन्हें काका... आपने बहुत ही अच्छा प्रश्न किया है... निसंदेह हम सौर ऊर्जा और पवन चक्कियों के द्वारा भी बिजली पैदा कर सकते हैं । लेकिन दोनों स्रोतों से बड़े पैमाने पर ऊर्जा का उत्पादन करने के लिये हमें बहुत ज्यादा जमीन की आवश्यकता होगी। दूसरा सौर ऊर्जा के लिये हमें दिन में तो सूर्य भगवान मिल जायेंगे लेकिन रात में हम बिजली कैसे उत्पन्न करेंगे ?
(सब लोग सोचते हुए...)
समीर : और जहां तक पवन चक्की की बात हैं तो उसके लिये हर समय हवा के सही प्रवाह और नियंत्रण की जरूरत होती है... जबकि परमाणु बिजली घर के लिये कम जगह की जरूरत होती है और बड़े पैमाने पर चौबीसों घंटे बिजली पैदा की जा सकती है । समझे... ? और हाँ इससे बनने वाली बिजली की लागत भी काफी कम होती है । और वो किफायती भी होती है ।
पार्वती : लेकिन बेटा हमने तो ये भी सुना है कि अणु ऊर्जा काफी खतरनाक होती है और संकट के समय में इससे काफी जान-माल का नुकसान होता है ।
समीर : पार्वती काकी, क्या आप जानती है कि दुनिया में सबसे ज्यादा खतरनाक अगर कोई चीज है तो वो है आग । जी हाँ आज से ८ लाख वर्ष पूर्व जब सबसे पहले आग का आविष्कार हुआ था तो उससे निकलने वाली ऊर्जा से हजारों लोगों की मौत और सम्पत्तियों का नाश हो गया था... लेकिन आज एक छोटा बच्चा भी अपनी जेब में माचिस लेकर बड़े आराम से घूमता है... जानती हैं क्यों ? क्योंकि हमने इसको सही तरह से उपयोग में लाना सीख लिया है । इसी प्रकार पूरी तरह से सुरक्षा और सावधानी से अगर कोई भी काम करिये तो किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचा जा सकता है। इसके अलावा कई बार हजारों लोग रेल और हवाई दुर्घटनाओं के शिकार हो जाते हैं । लेकिन इसके बावजूद क्या लोग रेलगाड़ी और हवाई जहाज में जाना बंद कर देते है ?

समीर: हर वर्ष हजारों लोग बाढ़, भूकंप, भूस्खलन या फिर आय दिन होने वाली सड़क दुर्घटना में अपनी जान गंवा देते हैं। इसलिये अपने मन से इस सब बातों को दूर भगाइये और अच्छी चीजों का स्वागत करिये ।
बुधिया: लेकिन समीर बेटा परमाणु बिजलीघर से हमें क्या फायदा होगा? सुना है सरकार तो हमारी ज़मीन भी लेने वाली है। हम क्या खायेंगे... रहेंगे कैसे?
समीर: देखिये काका अगर सरकार आपकी ज़मीन लेगी तो उसके बदले आप सबको उचित मुआवजा भी मिलेगा। आप सबको पुनर्व्यवस्थित करना सरकार की ज़िम्मेदारी है। और जरा सोचिये कि परमाणु बिजलीघर लगने के बाद गाँव की कितनी तरक्की होगी।
School
समीर: जहाँ आपके गाँव में ५-६ घंटे बिजली आती है, वहीं २४ घंटे बिजली आयेगी... गाँव में आपके बच्चों के पढ़ने के लिये विद्यालय बनेंगे, जहाँ आपके बच्चों को मुफ्त शिक्षा मिलेगी, अस्पताल का निर्माण होगा, जहाँ आपको नि:शुल्क चिकित्सा की सुविधा मिलेगी।
समीर: इसके साथ ही पक्की सड़कें, पानी, सामुदायिक केंद्र और लगभग सभी लोगों को उनकी योग्यता के अनुसार रोज़गार के अवसर भी मिलेंगे।
समीर: कुल मिलाकर आप सबकी तरक्की होगी और आपका गाँव खुशहाल बनेगा।
(सभी के चेहरे खिल उठते हैं...)
बुधिया: बेटा, ये सब तो ठीक है... मगर एक बात बताओ कि ये परमाणु बिजलीघर कितने सुरक्षित हैं? तब क्या होगा जब भूकम्प या सुनामी आ जाये? ऐसे में हमारा क्या होगा?

हाँ हाँ, हमारा क्या होगा? (सब के सब बोलते हैं...)
समीरः शांत हो जाइये... आपका सोचना बिल्कुल सही है... लेकिन मैं आपको जानकारी के लिये बता दूँ कि देश में जितने भी हमारे परमाणु बिजलीघर हैं वो सब के सब सुरक्षित हैं। उनका पूरी तरह से विभिन्न चरणों में परिक्षण करने के बाद ही सरकार से निर्माण की मंजूरी मिलती है।
जिस जगह परमाणु बिजली घर लगाना होता है उस जगह पर कई वर्षो तक उसकी भौगोलिक स्थिति का पता लगाया जाता है, अगर वहाँ पर भूकंप या सुनामी आने की जरा सी भी संभावना होती है तो सरकार वहाँ पर परमाणु बिजली घर लगाने की अनुमति नहीं देती है... और हाँ, अगर आपको याद हो जब हमारे देश में गुजरात में भूकम्प और चेन्नई मे सुनामी आयी थी संकट की उस घड़ी में भी हमारे परमाणु बिजलीघर चट्टान की तरह अडिग और सुरक्षित थे और बिजली का निर्माण सुचारु रुप से कर रहे थे।
नन्हें: लेकिन समीर बेटा आखिर हमें परमाणु बिजली घर क्यों चाहिये? हम सब तो ऐसे ही ठीक है। हमारा काम तो खेती और मछली पालन है। हम तो वही करना चाहते हैं। हमें आखिर बिजली क्यों चाहिये?
बुधिया : हाँ बेटा, वर्षो से हमारे बाप दादा और परदादा भी इसी व्यवसाय में थें... आज हम भी इसी व्यवसाय में है और अपने बच्चों की परवरिश कर रहे हैं... आख़िर हमें इससे क्या फायदा? हमारा काम तो चल ही रहा है।
मिसरी : हाँ-हाँ हम तो अच्छे से अपने मकानों में खुशी खुशी रह रहें हैं फिर हम क्यों फिक्र करें...?
पार्वती : हाँ हमें तो सुबह-शाम की रोटी और तन ढकने को कपड़ा मिल जाता है हमें इससे ज्यादा और क्या चाहिये?

समीर : वाह बुधिया काका... पार्वती काकी... क्या खूब कहा आपने? अगर सब लोग आपकी ही तरह सोचने लग जाते तो आज भी हमारा देश जैसे ६० साल पहले था वैसे आज भी होता... आज आज़ादी के ६० साल बाद भारत का नाम विश्व के चुनिंदा देशों में लिया जाता है... ज़रा सोचिये कि हर आदमी अगर आप और आपके बाप दादा ही की तरह गाँव में रहकर खेती या मछली पालन करता तो क्या हमारे देश में चिकित्सक, इंजीनियर, वैज्ञानिक, खिलाड़ी या उद्योगपती बन पाते?
समीर : आप अगर बीमार होते तो आपका इलाज कौन करता? आपके लिये रोज़मर्रा की जरूरत के समान का निर्माण कौन करता? नये-नये आविष्कार कौन करता? आज भी आज़ादी के ६० साल बाद भी आपकी सोच नहीं बदली है। आज भी आप अंधविश्वास और अज्ञानता की बेड़ियों में जकड़े हुये हैं।
समीर : बुधिया काका... देश में विकास का होना बहुत जरूरी है... जिसका सबसे बड़ा आधार बिजली है... अगर हमारे देश में बिजली बनेगी तभी हमारे देश की उन्नति होगी... आपके गाँव में बिजली आयेगी तो आपके ट्यूबवेल ज्यादा से ज्यादा सिंचाई कर सकेंगे और अत्याधुनिक ट्रैक्टर और गुणवत्ता वाले बीजों की मदद से आपके खेत पहले से १० गुना अधिक फसल पैदा करेंगे और आपका जीवन स्तर सुधरेगा।
(सब के सब एक दूसरे की तरफ देखते हुए...)

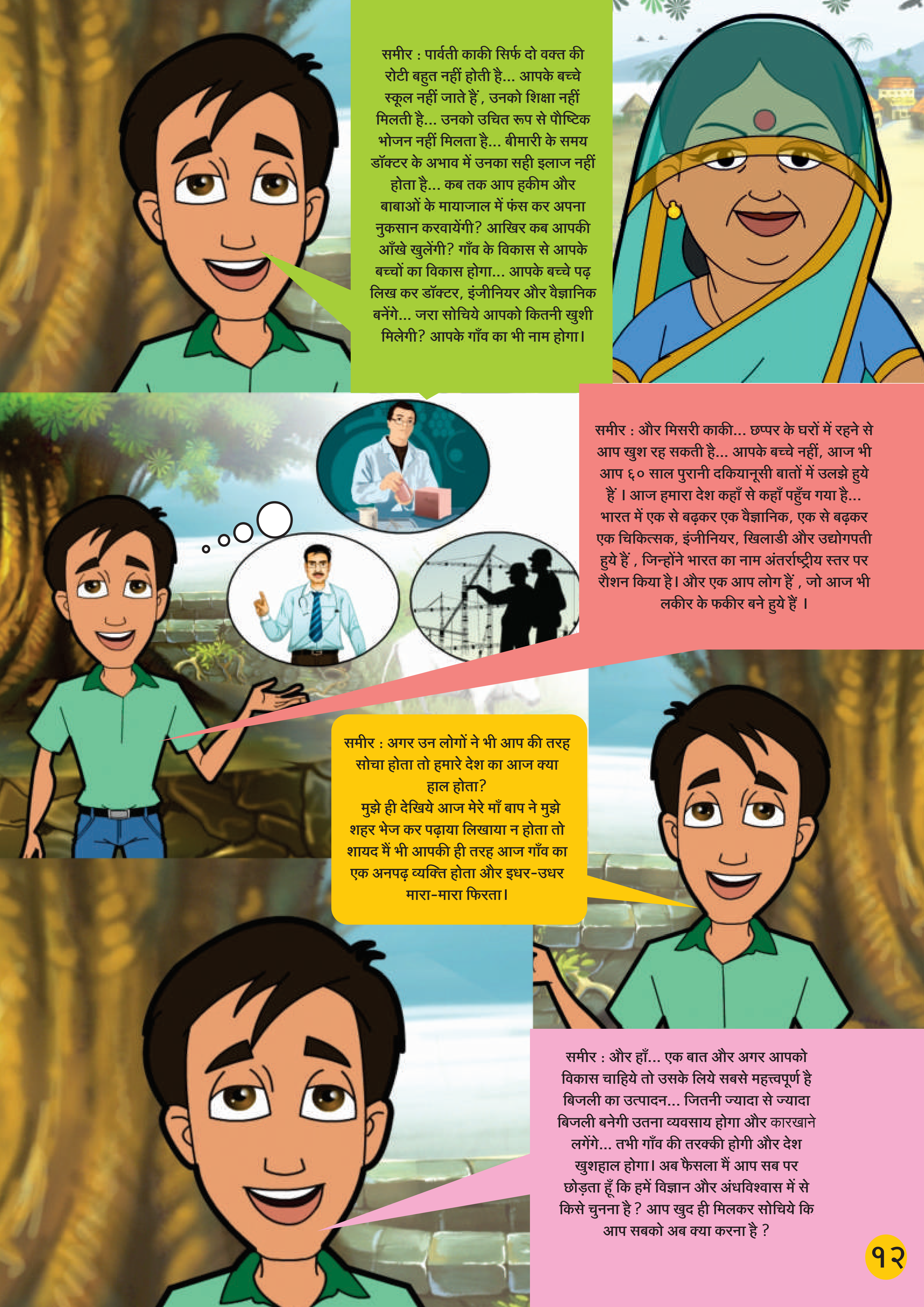
समीर : पार्वती काकी सिर्फ दो वक्त की रोटी बहुत नहीं होती है... आपके बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं, उनको शिक्षा नहीं मिलती है... उनको उचित रूप से पौष्टिक भोजन नहीं मिलता है... बीमारी के समय डॉक्टर के अभाव में उनका सही इलाज नहीं होता है... कब तक आप हकीम और बाबाओं के मायाजाल में फंस कर अपना नुकसान करवायेंगी? आखिर कब आपकी आँखे खुलेंगी? गाँव के विकास से आपके बच्चों का विकास होगा... आपके बच्चे पढ़ लिख कर डॉक्टर, इंजीनियर और वैज्ञानिक बनेंगे... जरा सोचिये आपको कितनी खुशी मिलेगी? आपके गाँव का भी नाम होगा।
समीर : और मिसरी काकी... छप्पर के घरों में रहने से आप खुश रह सकती है... आपके बच्चे नहीं, आज भी आप ६० साल पुरानी दकियानूसी बातों में उलझे हुये हैं। आज हमारा देश कहाँ से कहाँ पहुँच गया है... भारत में एक से बढ़कर एक वैज्ञानिक, एक से बढ़कर एक चिकित्सक, इंजीनियर, खिलाडी और उद्योगपती हुये हैं, जिन्होंने भारत का नाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रौशन किया है। और एक आप लोग हैं, जो आज भी लकीर के फकीर बने हुये हैं।
समीर : अगर उन लोगों ने भी आप की तरह सोचा होता तो हमारे देश का आज क्या हाल होता? मुझे ही देखिये आज मेरे माँ बाप ने मुझे शहर भेज कर पढ़ाया लिखाया न होता तो शायद मैं भी आपकी ही तरह आज गाँव का एक अनपढ़ व्यक्ति होता और इधर-उधर मारा-मारा फिरता।
समीर : और हाँ... एक बात और अगर आपको विकास चाहिये तो उसके लिये सबसे महत्त्वपूर्ण है बिजली का उत्पादन... जितनी ज्यादा से ज्यादा बिजली बनेगी उतना व्यवसाय होगा और कारखाने लगेंगे... तभी गाँव की तरक्की होगी और देश खुशहाल होगा। अब फैसला मैं आप सब पर छोड़ता हूँ कि हमें विज्ञान और अंधविश्वास में से किसे चुनना है? आप खुद ही मिलकर सोचिये कि आप सबको अब क्या करना है?

समीर : और मिसरी काकी एक बात और... हम सब यहाँ बैठकर इतनी बातें कर रहें है कि परपाणु ऊर्जा खतरनाक है, इससे विकिरण निकलता है... जब कि परमाणु बिजली घर में काम करने वाले हमारे इंजीनियर अपने परिवार के साथ वहाँ भली-भांति कई वर्षों से रह कर देश की प्रगति में अपना योगदान दे रहें हैं ।
बुधिया:
हाँ बेटा तुम बिल्कुल सही कह रहे हो। हमारा सारा भ्रम दूर हो गया है । वर्षों से हम अपनी जिस रूढ़िवादिता और अज्ञानता के बंधन में बंधे थे, तुमने आज उसी बंधन से हमें आज़ाद कराया और एहसास दिलाया कि हमें आज अपनी मानसिकता और सोच को बदलने की जरूरत है। और इसके लिये अब हम सब तैयार हैं।
समीर: और हाँ...एक बात और कोई कितना भी आपको बहकाये या परमाणु बिजलीघर के बारे में गलत प्रचार करे, आप सबको उसकी बातों में बिल्कुल नहीं आना है। समझे ?
सब के सब: समझ गये समीर बेटा... बेटा तुमने तो हमारी आँखे खोल दी और हमारे सारे शक और गलतफहमी बहुत ही अच्छी तरह से दूर कर दिया और हमें एहसास दिलाया कि हमें भी देश के विकास में अपना योगदान देना होगा। हम सब तैयार हैं अपने गाँव को खुशहाल बनाने और देश की तरक्की में भागीदार बनने के लिये।
समीर: हाँ एक बात और...आपको शायद ये जानकर आश्चर्य होगा, लेकिन ये सच है कि परमाणु बिजली घरों के आस-पास स्वच्छ और हरित पर्यावरण होने के कारण लाखों पंछियों और तितलियों ने भी इन्हें अपना निवास स्थान बना के रखा है।

समीर की बाते सुनकर बुधिया और अन्य गाँव वालों ने परमाणु बिजली घर में सैर करने का मन बनाया।
क्या हुआ जब बुधिया और गाँव वालों ने परमाणु बिजली घर की सैर की?
उन्हें वहाँ सैर करके कैसा लगा?
उन्होंने वहाँ जाकर क्या देखा?

जानने के लिये प्रतीक्षा करें अगले अंक की...

"अणु ऊर्जा... देश की ऊर्जा।
स्वच्छ ऊर्जा... स्वच्छ भारत।"

बुधिया की सैर...
कहानी परमाणु बिजली घर के सैर की...

क्रमशः

एनपीसीआईएल
NPCIL

न्यूक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
द्वारा जनहित में जारी...

द्वारा प्रकाशित

कार्पोरेट प्लानिंग और कार्पोरेट कम्यूनिकेशन्स निदेशालय (सीपी और सीसी)

६-एस-१४, विक्रम साराभाई भवन, अनुशक्तिनगर, मुंबई - ४०० ०९४.
ई-मेल : cpcc@npcil.co.in
वेबसाईट : www.npcil.nic.in